Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2023 International Council for Education Research and Training
2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

समावेशी वर्ग में शिक्षा समता और समानता भीमराव रामजी अंबेडकर का दृष्टिकोण

शर्मा, अभिषेक [1] व शर्मा, अन्नू[2]

[1]अकादमिक काउंसलर सहायक प्रोफेसर, इग्नू आरसी दिल्ली-3 स्टडी सेंटर आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

[1]प्रोजेक्ट मैनेजर, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (NIEPA) श्री अरबिंदो मार्ग नई दिल्ली

[2]शोधार्थी, सामाजिक और सामुदायिक चिकित्सा, संतोष डीम्ड यूनिवर्सिटी

सार डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर का समावेशी वर्ग में शिक्षा, समता और समानता का दर्शन भारत के सामाजिक आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। आजादी के बाद के दशकों में हम विभिन्न विधानों और सरकारी संस्थानों के माध्यम से पहुंच और समानता के मुद्दों में व्यस्त रहे हैं। इन में अम्बेडकर ने शिक्षा, शैक्षिक संस्थान, जाति, धर्म, स्त्री आदि मामलों पर प्रकाश डाला। अंबेडकर का मानना हैं की समता और समानता यह हर इंसान की जरूरत ही नहीं यह सभी का अधिकार है। जो खुलकर और बेबाकी से बाबा साहब ,बी. आर. अम्बेडकर ने समाज को बताया। बी. आर. अम्बेडकर ने समाज के उन सभी वर्गों को समावेशी कहा, जिनका समाज के अन्य वर्गों द्वारा कहीं न कहीं शोषण किया गया है। या फिर किसी व्यक्ति के माध्यम

@2023 International Council for Education Research and Training 2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

से अभी भी शोषण किया जा रहा हो। अम्बेडकर ने भारत में बिना अधिकारों के रहने वाले प्रत्येक भारतीय लोगों के अधिकारों के बारे में बात की क्योंकि आजादी के बाद ऐसे कई लोग हैं जो उस समाज में रहते तो है पर अधिकार के नाम पर उनका शोषण ही हो रहा है। अम्बेडकर ने जन्म-आधारित उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए अथक संघर्ष किया, जिसमें कुछ उच्च वर्गों के लाभ और विकास के लिए शिक्षा, रोजगार, आवास और समान अवसर जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रतिबंधित हैं। संविधान सभी पहलुओं में समता समानता को दर्शाता है और इसकी संरचना में एक महत्वपूर्ण घटक साबित होता है। संविधान बनाते समय बाबासाहेब ने समान रूप से समावेशी वर्ग को शामिल किया और उन्होंने प्रस्तावित किया कि समावेशी समाज भी मनुष्य हैं इसलिए कोई पक्षपात नहीं होना चाहिए और हमें जाति सूत्र के बिना एक राष्ट्र का विचार प्रदान किया।

कुंजी शब्द *समावेशी, समता, समानता, दलित, शोषित।*

परिचय

14 अप्रैल 1891 को जन्मे **भीमराव रामजी अंबेडकर** एक सामाजिक विचारक, न्यायविद, अर्थशास्त्री और संविधानविद के रूप में जाना जाता थे। अंबेडकर को बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता है। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर एक सर्वकालिक प्रगतिशील विचारक थे जिन्होंने जीवन भर समानता और न्याय के लिए संघर्ष किया। बाबासाहेब का शैक्षिक दर्शन उस समय की सामाजिक संरचना की प्रतिक्रिया थी जिसमें वे रहते थे, और उनके अनुभवों ने शिक्षा पर उनके दृष्टिकोण को आकार

@2023 International Council for Education Research and Training
2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

दिया। उन्होंने अपने लेखन, भाषणों और पहलों के माध्यम से भारत में सामाजिक न्याय और जनता के विकास की वकालत की। इसके साथ ही बाबासाहेब एक भारतीय न्यायविद्, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे जिन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) के खिलाफ सामाजिक भेदभाव के खिलाफ अभियान चलाया, साथ ही साथ महिलाओं और श्रम अधिकार की बात करी। बाबासाहेब स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री और भारतीय संविधान के प्राथमिक वास्तुकार भी थे। बाबासाहेब का योगदान समाज के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है। एक विविध समाज में समता और समानता को सशक्त बनाने के साथ-साथ उनकी स्थिति को समझने के लिए अम्बेडकर के विचार महत्वपूर्ण हैं।

समावेशी वर्ग से तात्पर्य उस समाज के लोगो के लिए है जहां लोग अपने जन्म, जाति, धर्म, लिंग व आर्थिक विकास आदि के आधार पर लोगो का शोषण कर रहे हैं। अम्बेडकर के सन्दर्भ में समावेशी वर्ग उन लोगों के लिए कहा गया है, जो बुनियादी वस्तुओं को प्राप्त करने में सक्षम तो है लेकिन हमारे पुराने भारतीय समाज वर्गीकरण के कारण प्राप्त न करने के लिए मजबूर हैं। या फिर समाज का उच्च वर्ग उन्हें इन चीजों को पाने का अधिकार नहीं देता है। समावेशी वर्ग का विकास और समावेशी समाज की पहचान निर्माण के साथ उनके वैचारिक समर्थन के लिए फायदेमंद है क्योंकि समावेशी समाज में जागरूकता बढ़ रही है कि जाति-आधारित व्यवस्था वाली पारंपरिक हिंदू सामाजिक व्यवस्था उनके लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित नहीं कर सकती है। डॉ. बी. आर. अंबडकर ने

@2023 International Council for Education Research and Training
2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

सभी समावेशी समाज के लिए शिक्षा की वकालत की और समावेशी समाज के शैक्षिक सशक्तिकरण का भी आह्वान किया। उन्होंने भारत में एक समावेशी वर्ग को समता व समानता के साथ समाज में जोड़ने में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया है। उनके प्रयासों ने आधुनिक युग में समावेशी वर्ग; दलितों, महिलाएं और हाशिए के लोगों के बीच शिक्षा के स्तर को बढ़ाया है, तथा उन्हें समाज में सशक्त बनाया बनाने व जोडने पर बल दिया है ।

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर एक ऐसा समाज प्रणाली चाहते थे जो सभी वर्गहीन एवं समता और समानता के रूप से एक हो। उनका समाज बौद्ध विचारधारा पर आधारित लोकतांत्रिक, समाजवादी था। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, समाज जनशक्ति के तर्क पर आधारित होना चाहिए न कि जाति व्यवस्था की परंपराओं पर। सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से समता और समानता के बिना समाज सुरक्षित नहीं है। समता और समानता के लिए डॉ. अम्बेडकर का विचार उनके शैक्षिक स्तर को ऊपर उठाना था ताकि वे अपनी स्थिति को जान व समझ सकें, और अपने आप को अपने वर्ग, समाज को उच्च वर्ग के स्तर तक उठा सकें और अपने अधिकार को समझ उसका प्रयोग एक साधन के रूप में राजनीतिक शक्ति का उपयोग करने की स्थिति में हों। उनका मानना था कि समावेशी वर्गों की मुक्ति शिक्षा पर आधारित है क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों का दावा कर सकता है और विकास के लिए प्रेरित हो सकता है। समता और समानता न केवल मानव मन को सोचने के लिए बल्कि सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए सही निर्णय लेने के लिए भी प्रशिक्षित करता है। उन्होंने

@2023 International Council for Education Research and Training 2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

समावेशी समाज को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अन्याय के बारे में भी जगाया और उन्हें एक ऐसे समाज की स्थापना की और संभावनाओं से अवगत कराया जिसमें उन्हें समान अधिकार, सम्मान और अवसर दिए जा सकें और उन्हें समान माना जा सके। उन्होंने पेशेवर शिक्षा के खिलाफ तर्क दिया और सामाजिक मुक्ति और स्वतंत्रता के लिए धर्मनिरपेक्ष शिक्षा पर जोर दिया। उनका शिक्षा का दर्शन स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय और नैतिक चरित्र के मूल्यों को मन में बैठाना था।

डॉ बी आर अम्बेडकर की शैक्षिक, समता और समानता दृष्टि

1. **समता और समानता के लिए विद्यालय और शैक्षणिक संस्थानों की स्थिति और समझः** डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि विद्यालय व शैक्षणिक संस्थान को सभी लोगों के लिए मुफ्त और सुलभ बनाएँ यह पुरानी पदानुक्रम प्रणाली पर आधारित ना हो। विद्यालय में हर जाति, धर्म, लिंग, का स्वागत का माहौल हो। और बिना किसी पक्षपात के व्यवहार के शिक्षक ध्यान रखेंगे और छात्रों को पढ़ाएंगे क्योंकि एक शिक्षक भविष्य का निर्माता हैं। इसके साथ ही शिक्षक को सभी को शिक्षित करने के समान अवसर का भी समर्थन व समान अवसर प्रदान करना चाहिए। और स्कूल एक ऐसा स्थान होना चाहिए जो सभी को स्वीकार करे और लोगों को उनकी सामाजिक स्थिति, रंग, जाति, धर्म आदि पर किसी भी बच्चे से परहेज या मना न किया जाए। अम्बेडकर अनिवार्य शिक्षा और विकास के लिए समाज में सभी समावेशी वर्ग के लिए एक निडर, समता और समानता अनिवार्य शिक्षा बनाना

@2023 International Council for Education Research and Training
2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

चाहते थे। इस प्रक्रिया के माध्यम से समावेशी वर्ग की क्षमता बढ़ाने के लिए स्कूल और शैक्षणिक संस्थान महत्वपूर्ण हैं।

2. **छात्र और शिक्षा** डॉ अम्बेडकर का विचार है कि छात्र आने वाले समाज का भविष्य है इसलिए सभी को शिक्षित होने की आवश्यकता ही नहीं बल्की अधिकार होना चाहिए। बाबासाहेब ने बहुत सारे संस्थानों में काम कर अपना कीमती समय व सेवा की और इसके कारण वे छात्रों की इच्छा व मन को बेहतर ढंग से समझते थे। उन्होंने शिक्षा के मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करा तथा छात्रों को ज्ञान, बुद्धि, विनम्रता और सख्त अनुशासन पर आत्मनिर्भर होने पर बल दिया। अम्बेडकर ने छात्रों के व्यवहार को शुद्ध और गीली मिट्टी के रूप में वर्णित किया है, जो ठोस शिक्षा के माध्यम से ही किया जा सकता है। अम्बेडकर ने छात्रों के आचरण के लिए ज्ञान, बुद्धिमत्ता, विनम्रता, सख्त अनुशासन और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि शैक्षिक प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों में सामाजिक भावनाओं को भी शामिल किया जाना चाहिए। संस्कारी, ज्ञानी और शिक्षाविद् होने के लिए शिक्षक को छात्रों की शिक्षा में बुनियादी समस्याओं और खामियों को समझना चाहिए। पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री को संस्कृति, रीति-रिवाजों, कर्तव्यों, अर्थव्यवस्था, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, विभिन्न समाजों के बारे में ज्ञान और तार्किक तथ्यों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए।

3. **समता और समानता के लिए शिक्षा और शिक्षक की भूमिका** डॉ अम्बेडकर ने कहा: "प्राथमिक शिक्षा का

@2023 International Council for Education Research and Training 2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक बच्चा साक्षर बने और जीवन भर साक्षर बना रहे।" और यह विचार बताता है कि बाबासाहेब अम्बेडकर उन महान शिक्षकों में से एक हैं जिनके पास नवाचार और रचनात्मक विशेषज्ञता है। शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जिसे कैसे भी, कहीं से भी लिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक के रूप में आप पर कई जिम्मेदारियां होती हैं, इसलिए शिक्षक में बहुमुखी, तेज दिमाग और चयनात्मक चरित्र जैसे कई गुण होने चाहिए। जिस प्रकार एक कुम्हार गीली मिट्टी को आकार देकर उपयोगी बनाता है, उसी प्रकार शिक्षक बच्चों को शिक्षित कर राष्ट्र के विकास और भविष्य को आकार देता है। और इसके साथ ही बाबासाहेब सोचते हैं कि हर शिक्षण संस्थान में अच्छे दिल वाले शिक्षक होने चाहिए जो शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करे ना कि जाति, धर्म लिंग और आर्थिक कारकों पर। एक शिक्षक के रूप में बाबासाहेब अम्बेडकर हमेशा देश के कल्याण के बारे में सोचते हैं जो कि शिक्षा, समता और समानता द्वारा किया जा सकता है।

4. **समता और समानता के संदर्भ में शिक्षा और ज्ञान** अम्बेडकर को लगता है कि मानव अपने ज्ञान के साथ सामाजिक, आर्थिक और नैतिकता आदि जैसे अपने लक्ष्यों को संग्रहित कर सकता है। तथा ज्ञान ही एक मात्र मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक विकास का आधार होना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर ने ज्ञान के दो उद्देश्यों की पहचान की:

- इसे दूसरों की भलाई के लिए प्राप्त करना और
- इसे स्वयं की बेहतरी के लिए उपयोग करना।

@2023 International Council for Education Research and Training
2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

उनका मानना है कि बुद्धि एक हथियार की तरह है जिसे हम शिक्षा और ज्ञान से बढ़ा सकते हैं तथा इसके जरिए हम कोई भी लड़ाई जीत सकते हैं। और चतुराई और बौद्धिकता के लिए अच्छे चरित्र और पवित्र हृदय के साथ विनम्रता की भी आवश्यकता होती है। तथा शिक्षा ही वह अस्त्र है जिसके द्वारा मनुष्य जीवन बनता हैं और मानव शोषण से मुक्त हो सकता है और गुलामी के खिलाफ क्रांति उठा सकता है। तथा ज्ञान द्वारा स्वावलम्बन की प्राप्ति ही शिक्षा, समता और समानता का प्रमुख उद्देश्य है।

5. **भविष्य के सन्दर्भ में शिक्षा भोजन के समान है** डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का मानना है कि जिस तरह जीने के लिए भोजन जरूरी है, उसी तरह अगर शिक्षा को अनिवार्य बना दिया जाए तो मानव जीवन सफल हो जाता है। भोजन से मनुष्य अभी का अपना जीवन सुचारू रूप से व्यतीत कर सकता है, परन्तु शिक्षा से मनुष्य भविष्य की दृष्टि से अपने जीवन को सुरक्षित करता है। शिक्षा भोजन के समान है क्योंकि शिक्षा से ही मनुष्य अपने अधिकारों, मौलिक लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकता है और अपने भविष्य और समाज का उत्थान कर सकता है।

6. **शिक्षा और समाज का अंतर संबंध** बाबा साहेब अम्बेडकर का मानना है कि शिक्षा और समाज आपस में जुड़े हुए हैं क्योंकि शिक्षा ने समाज को एक सभ्य समाज के रूप में विकसित किया। यहां तक कि अंबेडकर का कहना हैं कि शिक्षा ही समानता के ताले खोलने की एकमात्र कुंजी है। समाज मानव द्वारा बनाया गया है लेकिन यह निर्भर करता है हम कैसा समाज चाहते हैं और हम कैसे समाज मे जी रहे हैं। क्योंकि डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

@2023 International Council for Education Research and Training
2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

ने हमेशा "पढ़ो और पढ़ो" का सामाजिक शैक्षिक दर्शन सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा के महत्व पर जोर दिया है। अम्बेडकर हमेशा शिक्षा को आर्थिक और शैक्षिक रूप से समाज में समता और समानता का प्रतीक मानते थे। और शिक्षा ही एक ऐसी चीज है जो समाज को बना या बिगाड़ सकती है। बाबासाहेब अम्बेडकर इस बात पर भी जोर देते है कि शिक्षा के माध्यम से ही समाज में सामाजिक और व्यवहारिक असमानताओं को दूर किया जा सकता है। शिक्षा का उद्देश्य है मनुष्य का समाजीकरण और नैतिकता।

सामाजिक अधिकार व न्याय प्राप्त करने के लिए शिक्षा समता और समानता की भूमिका

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर एक ऐसा समाज / प्रणाली चाहते थे जो सभी समता और समानता रूप से एक हो। उनका समाज बौद्ध विचारधारा पर आधारित समाजवादी व लोकतांत्रिक था। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, समाज सही गलत का तर्क के आधार पर आधारित हो न कि जाति व्यवस्था की कठोर परंपराओं पर। सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से समता और समानता के द्वारा ही समाज को सुरक्षित व प्रगति पर लाया जा सकता है। समता और समानता के लिए डॉ. अम्बेडकर का विचार लोगो को उनके शैक्षिक स्तर को ऊपर उठाना था ताकि वे अपनी स्थिति को जान सकें, आकांक्षाएं को पहचाने और उच्च वर्ग के स्तर तक उठ सकें और एक साधन के रूप में राजनीतिक शक्ति का उपयोग करने की स्थिति में हों सकें। अम्बेडकर का मानना था कि समावेशी वर्गों की मुक्ति शिक्षा पर आधारित है क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति ही अपने अधिकारों का दावा कर सकता है

@2023 International Council for Education Research and Training 2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

और विकास के लिए प्रेरित हो सकता है। समता और समानता न केवल मानव मन को सोचने के लिए बल्कि सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए सही निर्णय लेने के लिए भी प्रशिक्षित करता है। उन्होंने कहा कि, "यह समता और समानता ही है जो सामाजिक गुलामी को काटने का सही हथियार है और यह समता और समानता ही है जो समावेशी जनता को ऊपर आने और सामाजिक स्थिति, आर्थिक बेहतरी और राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल करने के लिए प्रबुद्ध करेगी।" उन्होंने समावेशी समाज को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अन्याय के बारे में भी बताया तथा जगाया और उन्हें एक ऐसे समाज की स्थापना की ओर प्रेरित किया जिसमे समावेशी समाज को आने वाले युग की संभावनाओं से भी अवगत कराया जिसमें उन्हें समान अधिकार, सम्मान और अवसर दिए जा सकें और उन्हें समाज का हिस्सा माना जा सके। समावेशी वर्ग को समाज में खुद को ऊपर उठाने के लिए शिक्षित करो, आंदोलन करो और संगठित करो, डॉ. अम्बेडकर के तीन अंतिम शब्द हैं।

निष्कर्ष

समावेशी समाज में शिक्षा समता और समानता के सशक्तिकरण के लिए तथा उनकी स्थिति को समझने के लिए अम्बेडकर के विचार बहुत आवश्यक हैं। समावेशी वर्ग के विकास और समावेशी समाज की पहचान निर्माण के साथ उनके वैचारिक समर्थन के लिए शिक्षा और उच्च संस्थानों की आवश्यकता है क्योंकि through the education समावेशी समाज में यह जागरूकता बढ़ रही है कि जाति आधारित पदानुक्रम के साथ पारंपरिक हिंदू सामाजिक व्यवस्था उनके लिए

@2023 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

सामाजिक न्याय सुनिश्चित नहीं कर सकती है और शिक्षा और समता और समानता ही इसे संग्रहित करने का एकमात्र तरीका है। डॉ बी आर अम्बेडकर ने समावेशी समाज के शैक्षिक सशक्तिकरण के लिए कहा और सभी को समावेशी शिक्षा प्रदान करने की वकालत की। उन्होंने भारत में समावेशी समाज के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर ध्यान दिया है। उनके प्रयासों से समकालीन युग में समावेशी वर्ग (दलितों और हाशिए) के लोगों के बीच शिक्षा का स्तर विकसित हुआ है और यह उन्हें समाज में सशक्त बना रहा है। साथ ही हम समान अवसर और अधिकार प्राप्त कर निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भग्रंथ सूची

1. Ambedkar, B. R. - *Wikipedia*. (2015, September 5). Ambedkar, B. R.. Wikipedia - *Wikipedia*. Retrieved April 11, 2023. https://en.m.wikipedia.org/wiki/B._R._Ambedkar

2. Kumar, S., & Kumar, D. S. (ND). *Dr. B. R. Ambedkar's idea on education: A quest for social Justice In India*. Parkinson's Disease Foundation Dr. B. R. Ambedkar's Idea on Education: A quest for Social Justice in India | Dr. SANTOSH KUMAR and Santosh Kumar - Academia.edu. Retrieved April 11, 2023, from https://www.academia.edu/41770719/Dr_B_R_Ambedkars_Idea_on_Education_A_quest_for_Social_Justice_in_India.

3. Kumar, S., & Ratne, R. V. (ND). *Dr. BR AMBEDKAR's Vision on the Education and its Relevance*. http://www.ijcrt.org ©2018 IJCRT, *6*, issue 1 march 2018 | ISSN: 2320.. Retrieved April 10, 2023. https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT1801600.pdf.

4. Paul, S., & Chatterjee, S. (ND). Graded Indian educational system through Babasaheb Dr. Ambedkar's lens. *IOSR*

@2023 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2023, Vol. 02, Issue 03, 350-357
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7611

Journal of Research and Method in Education. https://www.iosrjournals.org/iosr-jrme/papers/Vol-12%20Issue-6/Ser-2/E1206023036.pdf.

5. Relevance of dr. (n.d.). *B. R. Ambedkar for Inclusive Development in India*. https://www.researchgate.net/publication/332843192_Relevance_of_Dr_B_R_Ambedkar_for_Inclusive_Development_in_India_Inclusive_Development_Women_Empowerment_and_ Social_Justice Retrieved April 10, 2023.

Received on April 21, 2023

Accepted on June 23, 2023

Published on July 10, 2023